गजल

गंगा

(संशोधित आ अप्रकाशित)

-------जगदीश चन्द्र ठाकुर ‘अनिल’

विदेहक १ दिसम्बर वला विशेषांकमे

श्री जगदानंद 'मनु' द्वारा

बीछल गेल गलती सबहक संशोधन केलाक बाद

प्रस्तुत कएल जा रहल अछि

'गजल-गंगा'

भाग-1.

सरल वार्णिक बहरक गजल

-------जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

क्र. पहिल पाँती

1.लिखबाक मोन होइए पढबाक मोन होइए

2.जै खातिर मारा-मारी अछि

3.गीत-गजलमे लागल छी

4.कुदने की फनने की

5.काँट-कूस अछि बढ़ल बाटपर जहाँ-तहाँ

6.अपने छी एत्त' आ मोन कतहु टांगल अछि

7.कर्जाक मोटा माथपर उठेलहुँ कतेक बेर

8.मंदिरसँ हम उतरि गेलहुँ

9.आएब नीक लागल रहि जाएब नीक लागल

10.हमर अहाँक कसूर बहुत अछि

11. आइ आगि बोनमे पसरि गेल अछि

12.मोटर और बंगला अछैत राम-राम

13.पानि आँखिकेर बचा क' राखू

14.बहरक झंझटिसँ हमरा आजाद करू

15.लाज-धाखकें पाप बुझैए

16.कनहा पर गंगाजल ल'क' चललौं कोना-कोना

17.पाप धरणिसँ हटल कहाँ

18.धनसँ सुन्दर तन चाही

19.मोटर आ ने महल चाही

20.सदिखन कोनो बियोंतमे बाझल करैए आदमी

21.माटि-पानिले' देश-कोसले' अहाँक योगदान की

22.हम सीता और राम अहाँ छी

23.माछ दही केराके भार थिक गजल

24.चान रहल चलिते अहिना

25.लोक जतेक छथि दुनियामे

26. खिड़की केबार किछु नै महल कोना भेलै

27.अपने व्यथा कहै छी हम

28. किछु गाबि लिय' किछु गबा लिय'

29. एते बाझल किए रहै छी अंगनामे अहाँ

30.जंगल आओर पहाड़ देखलौं जीवनमे

31.थिक युद्धक मैदान ई जीवन कोना बढ़ू हम

32.ह'म अपन इतिहास पढ़ै छी जखन-तखन

33.इर्ष्या घृणा कपट और निंदा सीखि रहल छी

34.भय कुंठा आ संत्रास निराशा जीवनमे

35.सभ क्यो जे एहि तनमे छी

36.चालनिमे नित पानि भरैछी हम-अहाँ

37.तेल घटल सभठाँ सभ गाम आ शहरमे

38.मूँह अयनामे बेर-बेर देखै छी हम

39.जिनगी त मसकल सभठाँ अछि

40.चिंता तनकें दाबि रहल अछि की करियौ

41.जिनगीकें अखवार बनौने बैसल छी

42.आगि लागल जेना हो बजारेमे

43.पानि चालनिमे सभ दिन भरैत रहलौं

44. अहाँ पूब कहबै त ओ पच्छिम जाएत अहाँ की करबै

45.चारिटा दोकान चाहक हमर गामक चौक पर

46.मीता एहने लागि रहल अछि

47.हमर आँखिमे अछि नोर भरि गामक

48.रौदीक मारिसँ आइ कुहरैत हमर गाम

49.शब्दक पावन धाम बहुत अछि

50.ओकरा डरसँ आगि जरै छै की करबै

51.सत्यक खातिर लड़ि क' देखू

52.बीतल दुःखके बात करैछी

53.नोरेमे सभटा आखर दहा जाइए

54.फाँड़ बान्हि-बान्हि लोक चलिते रहल

55.जीबै छी जिनगी अहीं लागि क' हम

56.पोखरि बाध देखौलनि बाबा

57.सुरुज तरेगन चानक दुनिया

58.सभकें अपन समान बुझलियै

59.स'भ शहर सभ गामक छै

60.गाम-घरके हाल ने पूछू

61.गाम छोड़ि क' शहरमे एलौं

(1)

लिखबाक मोन होइए पढ़बाक मोन होइए

किछु-ने किछु सदिखन सिखबाक मोन होइए

अन्हड़ जे रातिखन एलै सभ गाछ डोलि गेलै

टिकुला कतेक खसलै बिछबाक मोन होइए

सासुर इनार होइए आ डोल थिकहुँ हमहूँ

किछु-ने-किछु एखनहुँ झिकबाक मोन होइए

अहाँ आबि जे रहल छी सुनि क' बताह भेलहुँ

गोबर सँ आइ आँगन निपबाक मोन होइए

दुइ ठोर ठीक अथवा तिलकोर केर तड़ुआ

होइए त लाज लेकिन चिखबाक मोन होइए

कोनो ऑफिसक चक्कर लगब'ने पड़ै ककरो

ई बीया विचार क्रांतिक छिटबाक मोन होइए

आजादीक लेल एखनहुँ संघर्ष अछि जरूरी

ने आब 'अनिल' मांगब छिनबाक मोन होइए

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-18)

(2)

जै खातिर मारा-मारी अछि

भात- दालि- तरकारी अछि

छात्र गरीबक धीया-पूता

विद्यालय सरकारी अछि

ई जे उल्लू देखि रहल छी

लक्ष्मी मैयाक सवारी अछि

सदाचारके शिक्षा सभठाँ

सभठाँ चोरबजारी अछि

घूस दहेजक चस्का बूझू

छूआछूतक बीमारी अछि

देश द्रौपदी भीष्म 'अनिल'

कोन एहेन लाचारी अछि

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण- 10)

(3)

गीत गजलमे लागल छी

ओ बुझैत छथि पागल छी

अहाँ रातिकें राति कहै छी

तें भरि गामसँ बारल छी

अहाँ बाढिएसँ तबाह छी

हम रौदीकेर मारल छी

हम स्वयंकें नहि चिन्हलौं

देखू केहेन अभागल छी

अहाँ कहै छी कविता सूनू

हम यात्राक झामारल छी

ऐ खेलाके यैह नियम छै

सभ जीतल आ हारल छी

‘अनिल’प्रेम चाही हमरा

प्रेमक ह’म पियासल छी

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण- 10)

(4)

कुदने की फनने की

अन्हराकें जगने की

सड़क आ ने बिजली

कुरसी पकड़ने की

पाप बढि गेल अछि

गंगाजीकें बहने की

शासन बहीर अछि

कहने की सुनने की

मोन अछि झमेलामे

राम-राम रटने की

सभ ठाम सुखराम

अन्नाजीकें सहने की

‘अनिल’शील देखियौ

कुंडली टा देखने की

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण- 8)

(5)

काँट-कूस अछि बढ़ल बाटपर जहाँ-तहाँ

श्रद्धा आ करुणा कमल बाटपर जहाँ-तहाँ

ई राजा कनिमोझी आ कलमाडीक युग थिक

केने छथि सभ दखल बाटपर जहाँ-तहाँ

दिन-देखारे मूँह दुसैए नगर निगमके

साँढ आ महिषा पड़ल बाटपर जहाँ-तहाँ

ऐंठन एखनहुँ धरि ओहिना के ओहिना छै

जौड़ कते अछि जरल बाटपर जहाँ-तहाँ

खोपड़ी ठाढ छलै अनगिनती बिला गेल छै

ठाढ भेल अछि महल बाटपर जहाँ-तहाँ

बूझि पड़ै अछि जीत गेल छथि पुत्र पितासँ

रंग कते अछि उड़ल बाटपर जहाँ-तहाँ

‘अनिल’ हजारो अन्ना केर आवश्यकता अछि

सत्य कते अछि गड़ल बाटपर जहाँ-तहाँ

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-17)

(6)

अपने छी एत्त’ आ मोन कतहु टांगल अछि

जानि नहि देखबाले’ की की सभ बाँचल अछि

सभ ठाम बिलाइ छैक और सभ ठाम रस्ता

घूरब कतेक बेर सभ बाट काटल अछि

करजा पर करजा और रसगुल्लाके भोज

ओझा बताह छथि कि भरि गाम पागल अछि

मुंबइमे छथि बालक आ चेन्नइमे कनियाँ

ई बूढ मोन दू टा हजार ठाम बाँटल अछि

जीवकान्त गौहर वियोगी आओर विहंगम

देखू अनगिनत फूल मालामे गाँथल अछि

गाम-गाम देखलहुँ ई दृश्य महाभारतक

शतरंजक खेलमे सभ हाथ बाझल अछि

'अनिल'जहिया सीता धरतीमे समयलीह

तहियासँ धरती हजार बेर फाटल अछि

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-17)

(7)

कर्जाक मोटा माथपर उठेलहुँ कतेक बेर

आ बैंकक गाड़ी देखि क’पड़ेलहुँ कतेक बेर

समधि-समधिनक बात सूनि फ़टैए करेज

सासु-ससुरकें हमहूँ कनेलहुँ कतेक बेर

आबि गेलहुँ बचि क’ चोर आ उचक्कासँ दिल्लीमे

मुदा अपनहि गाममे ठकेलहुँ कतेक बेर

नियारिक’कतहु जाएब से पार नहि लागल

तत्कालहिकेर टिकट कटेलहुँ कतेक बेर

छिछिआइत रहलौं सुन्दर शब्दक तलाशमे

लिखि-लिखि क’ अपनहि हटेलहुँ कतेक बेर

चुरुक भरि पानिमे किए डूबब अहाँ 'अनिल'

बाढिमे कतेक लोककें बचेलहुँ कतेक बेर

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-18)

(8)

मंदिरसँ हम उतरि गेलहुँ

सत्य सुनायब बिसरि गेलहुँ

चारिटा कन्यादान एखन अछि

एकहिमे हम उजड़ि गेलहुँ

कजरी लागल छलै बाटपर

चलिते गेलहुँ पिछड़ि गेलहुँ

अबइत छल बकियौता मांग'

बाध दीस हम ससरि गेलहुँ

अहाँक आँखिक नोर भेलौं हम

आइ गालपर टघरि गेलहुँ

‘अनिल’ हाट भेलौं भरि गामक

साँझ पड़ल त उसरि गेलहुँ

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-12)

(9)

आएब नीक लागल रहि जैब नीक लागल

दू-चारि दिन बिता क’घुरि जैब नीक लागल

सत बात बाजि क’कियो मुइल कहाँ कहियो

ईशा जकाँ शूली पर चढ़ि जैब नीक लागल

जखन जत' गहुमन सोझाँमे ठाढ़ भेटल

चुपचाप कात द' क' बढि जैब नीक लागल

भाफ जकाँ कखनो सागरसँ उड़ि क' भगलौं

आ मेघ जकाँ कखनो झड़ि जैब नीक लागल

हँसिए क' कटने छलौं पताल केर जीवन

आकाश जत' भेटल उड़ि जैब नीक लागल

छोड़ि देलौं परसल छप्पन प्रकार व्यंजन

'अनिल'अहाँक चिट्ठी पढ़ि जैब नीक लागल

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण- 17)

(10)

हमर अहाँक कसूर बहुत अछि

भाइ दिल्ली एखनो दूर बहुत अछि

भाइ कुम्भकर्णॅ सभ कोना क' जगता

सबहक कानमे तूर बहुत अछि

हे बास गहुमनक निश्चित बुझियौ

एहि घर सभमे भूर बहुत अछि

जतय-ततय सोहरल अछि चुट्टी

छीटल सबतरि गूर बहुत अछि

अछि नोर भरल मैथिलीक आँखिमे

'अनिल' महग सिन्दूर बहुत अछि

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-14)

(11)

आइ आगि बोनमे पसरि गेल अछि

लोक सड़क पर उतरि गेल अछि

देवता दनुज छथि मोनक भीतर

और उठापट्टक बजरि गेल अछि

फुलवारी सभ छल रंग-विरंगक

असमय सभटा उजरि गेल अछि

अछि गाछ बरक चौंसठि बरखक

झखड़ि गेल अछि हहरि गेल अछि

भाइ नौजवान चौहत्तरि बरखक

थाकब आ सूतब बिसरि गेल अछि

देखू चिंतामे ‘अनिल’ भारत माताकें

हँ नोर गाल पर टघरि गेल अछि

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-14)

(12)

मोटर और बंगला   अछैत राम-राम

किए भ’ गेल डाक्टर डकैत राम-राम

ई गाम आब गाम नै बजार बनि गेल

सभकें सभ भेटल ठकैत राम-राम

अहाँ सत्य जँ बजैत छी त सूतले रहू

सबहक अपन छै लठैत राम-राम

सड़लै गोदाममे टनक तन गहूम

रहि गेल लोक भूखे मरैत राम-राम

मैच-फिक्सिंगसँ ओ भ’ गेलाह माला-माल

लोक रहि गेल छक्का गनैत राम-राम

हुनक वेतन आ भत्ता अकाश ठेकल

लोक रौदीसँ टूटल लड़ैत राम-राम

लोक नाचय कूदय आ फटक्का फ़ोड़य

लाज होइछै ने बेटा बेचैत राम-राम

‘अनिल’ मैथिल छी आ कि अमैथिल छी यौ

छी घरोमे ने मैथिली बजैत राम-राम

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण- 15)

(13)

पानि आँखि केर बचा क' राखू

सुन्दर सपना सजा क' राखू

जागल लोक रहैए सूतल

सूतल सभकें जगा क' राखू

लोके ले' ई विधि-विधान अछि

लोकक खातिर जिया क' राखू

मरूभूमिमे जल नै भेटत

अपन मोनकें बुझा क' राखू

हेरा जाएत जे किछु भेटल

कतबो कत्तहु नुका क' राखू

बर आ कनियाँके मंगल हो

लक्ष्य एकहिटा बना क' राखू

संग 'अनिल' हम छोड़ू कोना

हँसा क' अथवा कना क' राखू

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-11)

(14)

बहरक झंझटिसँ हमरा आजाद करू

हम गजल छी हमरा नै बरबाद करू

कतेक गमौला पर भेटल अछि आजादी

जलियानावाला सन दुरदिन याद करू

अपने घरसँ भगा देलक अपने बेटा

ककरा लग जा क’ हम ई फ़रियाद करू

निंघटि जाएब दूनू प्राणी लड़िते-लड़िते

अपन ह्रदयकें करुणासँ आबाद करू

मिथिला केर छी बात ने कखनो ई बिसरी

हंसिते-हंसिते वाद करू प्रतिवाद करू

किछु नै होयत समस्याक माला जपलासँ

समाधान ले’ सतत सहज संवाद करू

कविता लिखलौं ‘अनिल’हजारो तामसमे

प्रेमक भाषामे सबहक अनुवाद करू

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-16)

(15)

लाज धाखकें पाप बुझैए

संस्कृति अभिशाप बुझैए

टीक छै गदहाक हाथमे

तें गदहोकें बाप बुझैए

चौका-छक्का हम नहि जानी

सभ अंगूठा छाप बुझैए

द'स कोस पर छै सासुर

ओ त दुइए धाप बुझैए

तू-तू मैं-मैं कहाँ सिखेलिऐ

सभ अपने-आप बुझैए

सभ प्रश्नके एके उत्तर

राम नामके जाप बुझैए

‘अनिल’चुप्प भ’गेलौं हम

‘टका’मात्र ओ नाप बुझैए

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-10)

(16)

कनहापर गंगाजल नेने चललौं कोना-कोना

सोचै छी हमहूँ पहाड़पर चढ़लौं कोना-कोना

घूमि-घामि सौंसे दुनियासं एलौं अपना गाममे
मोने अछि अपने आँगनमे खसलौं कोना-कोना

आइ पुतोहुक बातेसँ फाटैए कोंढ बुढारीमे
सासु-ननदि केर उक्का-धुक्का सहलौं कोना-कोना

गुजगुज राति अन्हार आ हम रही एसगर
एहि जंगलमे बाघ-साँपसँ बचलौं कोना-कोना

देव-भूमिमे देखिते-देखिते दहा गेली कनियाँ
छातीपर पाथर धेने हम रहलौं कोना-कोना

अपने भानस-भात करी झाड़ू आ पोछा अपने
अहाँ बिना छौ मास प्रिये हम कटलौं कोना-कोना

'अनिल'कथा सूनू भैया सोनक माया नगरीमे

ऐ बौरहबा मोनकें बशमे रखलौं कोना-कोना

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण- 18)

(17)

पाप धरणिसँ हटल कहाँ

रावण कहियो जरल कहाँ

खेलक सै मन धान बखारी

पेन कटल तें भरल कहाँ

भेल चिरौड़ी कत्ते दिन धरि

लोकपाल बनि सकल कहाँ

भरना रखितौं खेत भोज ले'

मुदा खेत अछि बचल कहाँ

लोक लोककें लोकहि मानय

कतहु कहाँ ई सुनल कहाँ

छौंड़ा सभ ताक' लागल अछि

कुम्भकर्ण अछि सुतल कहाँ

'अनिल'पसाही लागल देखी

धधरा एखनो उठल कहाँ

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-11)

(18)

धनसँ सुन्दर तन चाही

तनसँ सुन्दर मन चाही

बाहर सभ दुनिया-दारी

भीतर राम भजन चाही

नै चाही मोटर आ बंगला

हमरा नील गगन चाही

हम पावन आ शांत आत्मा

ई धियान सदिखन चाही

मित्र मोक्ष नै चाही हमरा

मरण और जीवन चाही

हानि-लाभ हो दुःख-सुख हो

मिलन आ बिछुड़न चाही

ई जीवन आंगन 'अनिल'

'हँसी-ख़ुशी' अरिपन चाही

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण- 10)

(19)

मोटर आ ने महल चाही

कविता गीत गजल चाही

ओ रस्तापर काँट छिटैए

ओकरा लेल जहल चाही

महिषासुर अछि उत्पाती

माँ दुर्गाक दखल चाही

किए खाधि आ पर्वत कत्तौ

स'भ खेत समतल चाही

घर दफ्तर वा करखाना

सभठाँ लोक कुशल चाही

अहिल्याक संताप हरैले'

नयनमे गंगाजल चाही

भार-चँगेरा मैथिलीक हो

जागल मिथिलांचल चाही

'अनिल'नीक अपने धूआ

नै पच्छिमक नक़ल चाही

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-10)

(20)

सदिखन कोनो बियोंतमे बाझल करैए आदमी

आदमीकें कतेक पाँतमे छाँटल करैए आदमी

आदमीक विवेक देखलहुँ साँढ आ महिषा जकाँ

हरियर जजात बाधक धाँगल करैए आदमी

आदमी केर रूप देखल बिलाड़ आ कुकुर जकाँ

आदमीक डरसँ एतय भागल करैए आदमी

आदमी केर देशमे भाइ आदमी केर टान अछि

आदमीक पेट पर एत’ नाचल करैए आदमी

सोचैत छी हम आदमीक सुविचारकें की भ’ गेलै

आदमीकें पाइसँ सतत नापल करैए आदमी

आदमी ले' 'अनिल'ओहने आदमी भगवान छथि

आदमीक दुःख-दरद जे बाँटल करैए आदमी

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-19)

(21)

माटि-पानि ले' देश-कोस ले' अहाँक योगदान की

अहाँ उपस्थित छी दुनियामे तकर प्रमाण की

अहाँ बान्हि नेने छी पट्टी अपन दूनू आँखि पर

आब अहाँ लेल कोनो राक्षस की आ भगवान की

ओ नंगटे ठाढ भ' गेल अछि ऐ चौबटिया पर

आब ओकरा लेल कोनो सम्मान की अपमान की

अहाँ जनैत छी लहरि गनि क' कमाएब पाइ

अहाँ लेल नोकरी की आ नून-तेलक दोकान की

अहाँ त बातेसँ क' दै छिऐ सभकें लहूलुहान

अहाँ ले' कोनो तीर की आ अहाँ ले'कोनो कमान की

अहाँ त छी नारद घुमैत रहै छी तीनू लोकमे

अहाँक लेल बाइक की मोटर की वायुयान की

साल भरिसँ संगे रहै जाइ छी अहाँ दूनू गोटे

'अनिल' अहाँ सभ लेल परिछन की चुमान की

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-18)

(22)

हम सीता और राम अहाँ छी

हमरे ले' बदलाम अहाँ छी

मंदिर-मंदिर कथी ले' दौड़ू

हमर त चारू धाम अहाँ छी

आब दौड़ि नै चलू बाट पर

गाछक पाकल आम अहाँ छी

ताकथि रामक बाट अहिल्या

कोसीक कातक गाम अहाँ छी

ड'र कथीके होयत हमरा

संग-संग आठो याम अहाँ छी

ककरो गरदनि के माला छी

ककरो लेल खराम अहाँ छी

'अनिल'देखलौं आइ अहाँकें

मानल पूर्ण विराम अहाँ छी

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-11)

(23)

माँछ-दही-केरा केर भार थिक गजल

ककरो ले' महफा-कहार थिक गजल

ककरो ले' पोखरि-इनार आ कि मंदिर

ककरो ले' हाट आ बजार थिक गजल

जिनगीमे काँट-कूस काँटहिमे जिनगी

जिनगीमे जंगल-पहाड़ थिक गजल

जिनगीमे साओन आ साओनमे बादरि

जीबाले’ रिमझिम फुहार थिक गजल

ककरो ले’ रातिक चकमक इजोरिया

ककरो ले’ अगबे अन्हार थिक गजल

दियाबाती छठि जूड़शीतल आ फगुआ

जिनगीमे पावनि-तिहार थिक गजल

ककरो शुभकामना करुणा आ ममता

ककरो सिनेह आ दुलार थिक गजल

हँसी आ ठहक्काक वरदान ककरो ले’

ककरो ले’ नोरक टघार थिक गजल

ककरो ले' सपना और ककरो ले' नारा

'अनिल'ले' मुक्तिक विचार थिक गजल

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-15)

(24)

चान रहल चलिते अहिना

बीतल युग तकिते अहिना

सुन्दर गीत अहाँ बनि गेलौं

रहलौं हम गबिते अहिना

वैह करू जे ह्रदय कहैए

लोक रहत बजिते अहिना

भोर अबैए चुप्पे सभदिन

साँझ रहल ढरिते अहिना

भीजि गेल पन्ना अखवारक

नोर रहल बहिते अहिना

अपनहि सोझाँ ठाढ़ भेल छी

हारि गेलहुँ लड़िते अहिना

फूलक गाछ निहारै छी हम

लाज होइछ कहिते अहिना

एहि डारिसँ ओहि डारि पर

'अनिल' गेला उड़िते अहिना

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-11)

(25)

लोक जतेक छथि दुनियामे

स'भ मगन छथि अपनामे

दारू पीबि अबै छथि अपने

आ दोख तकै छथि कनियाँमे

ह'म-अहाँ त कटलौं जिनगी

भोज भजन और करजामे

सीता बेटी जमाए राम छथि

कथीक कमी अछि मिथिलामे

गौआँ-घरुआ परेशान छथि

बर और कनियाँ महफामे

बूढ़ीके दिन-राति बितै छनि

उलहन आ किछु फकरामे

‘अनिल’कहू की भेद बाँचल

विश्वविद्यालय आ बनियामे

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-11)

(26)

खिड़की केबार किछु नै महल कोना भेलै

ने रदीफ़ आ ने काफिया गजल कोना भेलै

एसगर छलीह ओ आ छल दैत्य पांच टा

नै जानि तमसगीरकें रहल कोना भेलै

वृद्धाश्रमे ई ठीक हम आएब मासे-मासे

ई बात अपन बापकें कहल कोना भेलै

ओ नून मूर गूड़ संगे खाइत रहि गेलै

कहू त तीस साल धरि सहल कोना भेलै

अपवित्र जल थल ‘अनिल’आ अन्तरिक्ष

माफियाक सभठाँ एना दखल कोना भेलै

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-16)

(27)

जुनि पूछू की करै छी हम

नित्य स्वयंसँ लड़ै छी हम

काल्हि अहाँसँ डरै छलहुँ

आइ स्वयंसँ डरै छी हम

साँपक बिल देखल जै ठाँ

ओहि ठामसँ टरै छी हम

गरमी लागल भाफ भेलौं

बनिक' मेघ झरै छी हम

कोना कहू वेदना अपन

बेर-बेर जे मरै छी हम

'अनिल' ई जिनगी चालनि

कहुना पानि भरै छी हम

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण- 10)

(28)

किछु गाबि लिय' किछु गबा लिय'

जिनगी अछि फगुआ मना लिय'

ई सड़क बनल छै चलबा ले'

मोटर एहि ठामसँ हटा लिय'

अछि मोन हमर त मिथिलेमे

तनसँ कतबो अहाँ खटा लिय'

हम तमसायब मैथिलीएमे

अंगरेजी ई कतबो रटा लिय'

छाहरि सदिखन नै देत कियो

अरजी तलाक केर उठा लिय'

नहि चीन्हय अपनो लोक आब

हे प्रभु अपने लग बजा लिय'

लछमी दुरगा सरस्वती बुझू

हम लाज अहींक छी बचा लिय'

हमरो सहोदरे बुझू 'अनिल'

हमरहु करेजसँ सटा लिय'

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-12)

एते घूमल कत’ करै छी सपनामे अहाँ
अबै छी बड़ी-बड़ी राति क’ अंगनामे अहाँ

चलि जाउ दिल्लीए कि मुंबई कि बंगलोर
रहब एसगर कोना क’ पटनामे अहाँ

होइए दूनू गोटेकें भेंट एक साल पर
जखन कटनीमे हम छी सतनामे अहाँ

शकुनी आ दुरयोधन धृतराष्ट्र भेटता
सभ ठाम जँ ताकब कोनो घटनामे अहाँ

मारै छिऐ किए अहाँ मुक्कासँ ओकरा भाइ
जेहने छी तेहने देखब अयनामे अहाँ
अमृत बनैए ज’ल ई गर्मीमे सभ ठाम

चाहे लोटामे राखि पीबू कि बधनामे अहाँ

विवाहकें विवाह बस रह' दियौ 'अनिल'

फँसल किए छी कपड़ा आ गहनामे अहाँ

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-16)

(30)

जंगल आओर पहाड़ देखलौं जीवनमे

गुजगुज राति अन्हार देखलौं जीवनमे

भीषण गर्मीमे तापय तन-मन सभटा

ओ बरखा मुसलाधार देखलौं जीवनमे

मोनक नीलगगनमे छिटकै बिजलोका

ममता आ स्नेह-दुलार देखलौं जीवनमे

मनकेर आंगनमे दर्शन चारू धामक

आ मूल्यक हाट-बजार देखलौं जीवनमे

नृत्य गीत संगीत चौल और हंसी-ठहक्का

नोरक कतेक टघार देखलौं जीवनमे

मारि- पीट दंगा-फसाद छीना-झपटी सभ

आदर आ उच्च विचार देखलौं जीवनमे

देखलौं गंगा 'अनिल' नयनमे बहै छली

पोखरि आओर इनार देखलौं जीवनमे

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-16)

(31)

थिकयुद्धक मैदान ई जीवन कोना बढ़ू हम

अपने मित्रक मृत्युक कारण कोना बनू हम

भैया कक्का दादा मामा मौसा और पीसा छथि सोझाँ

सभसँ खेत-पथारक खातिर कोना लड़ू हम

राज-पाट की करब जखन लोके नहि रहतै

भीषण नर-संहारक पर्वत कोना चढ़ू हम

भीख मांगि बरु खाएब लड़ब नहि भैयारीमे

हे मधुसूदन गाण्ड़ीब हाथमे कोना धरू हम

हे केशब कृपया हमरा दुविधासँ मुक्त करू

'अनिल' बुद्धि नै काज करय की कोना करू हम

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-18)

(32)

हम अपने इतिहास पढै छी जखन-तखन

अहाँ त एखनहुँ मोन पड़ै छी जखन-तखन

किएक मोहि लेलक हमरहु सोनाक हरिण

हम अपनहिसँ प्रश्न करैछी जखन-तखन

अपन-अपन दुनियामे हम सभ हेरा गेलौं

इएह सोचि कय बेर मरैछी जखन-तखन

किएक पार कयलहुँ हम ओ लछुमन-रेखा

अपन कृत्य पर स्वय हँसै छी जखन-तखन

हम-अहाँ मिलि बदलि सकब एहि दुनियाकेँ

मनमे इएह विश्वास भरै छी जखन-तखन

सभक ठोर पर हँसी जीवनक लक्ष्य बनल

‘अनिल’मने-मन नाचि उठै छी जखन-तखन

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-18)

(33)

इर्ष्या घृणा कपट आओर निंदा सीखि रहल छी

कंठ अपन अपने हाथेँ हम मोकि रहल छी

गुरुजन केर अपमान द्रौपदी- चीरहरण

समर महाभारतक सामने देखि रहल छी

डाइबिटीज ब्लडप्रेशर और कैंसर-तैन्सर

अप्पन-अप्पन कर्मक फल ई भोगि रहल छी

याद करू त ओ राइत दिसम्बर सोलह केर

ह'म निरभया अपनेसं किछु पूछि रहल छी

बढल जाइत अछि ताम-झाम और वरियाती

ह'म अयाची-पुत्र किएक नहि रोकि रहल छी

'अनिल'हस्तिनापुरमे बैसल छथि शकुनीजी

धृतराष्ट्रजी कहब एखन की सोचि रहल छी

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-18)

(34)

भय कुंठा आ संत्रास निराशा जीवनमे

एखनो लिप्सा आओर पिपासा जीवनमे

हेरा गेल सभ जे भेटल छल कहियो

तैयो अछि जीवन केर आशा जीवनमे

मोन लगैए एखनो गाछ लगयबामे

गमकैए फल के अभिलाषा जीवनमे

हम आयल छी कत' किए आ के छी हम

एखनो अछि बाँचल जिज्ञासा जीवनमे

हँसि क कानी कानि हँसैछी हम सभठाँ

ताकी जीवन केर परिभाषा जीवनमे

हारि-जीत आ हानि-लाभके दुःख-सुख की

'अनिल'थीक ई नाच-तमाशा जीवनमे

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-15)

(35)

सभ क्यो जे एहि तनमे छी

महाभारतक रणमे छी

अहाँ अधर्मक संग भेलौं

बुझू जे अंतिम क्षणमे छी

धरतीमे अम्बरमे हम

आ सृष्टिक कण-कणमे छी

अपनहिमे ताकू हमरा

ह’म अहाँक नयनमे छी

चान-तरेगन संग रही

शब्दक नील गगनमे छी

सुखमे छी हम दुखमे छी

मोहक एहि बंधनमे छी

‘अनिल’अज्ञान हरू माता

ह’म अहींक शरणमे छी

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-10)

(36)

चालनिमे नित पानि भरै छी हम-अहाँ

फाटि गेल आसमान सिबै छी हम-अहाँ

रंग-अबीरक दिन ख़ट-खट बीतल

आब मात्र धुरखेल करै छी हम-अहाँ

तीस बरखसँ रहै छी संगे तइसँ की

एक-दोसरकें कहाँ चिन्है छी हम-अहाँ

कते जतनसँ सीचै छी नवगछुलीकें

सुन्दर सपना नित्य देखै छी हम-अहाँ

भोर दूपहर सांझ आ रातिक नाटक

नित्य हँसी और नित्य कनै छी हम-अहाँ

माथक मोटा हल्लुक कहियो भेल कहाँ

नित्य मरी और नित्य जिबै छी हम-अहाँ

आउ एको पल बैसि प्रेमसँ गप्प करी

भरि दिनमे सै बेर लड़ै छी हम-अहाँ

काल्हुक दिन हेतै शुभ दिन हमरो ले’

यैह सोचि सभ राति सुतै छी हम-अहाँ

नोर आँखिके एक-दोसरक पोछी हम

चलू’अनिल’संकल्प करै छी हम-अहाँ

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-15)

(37)

तेल घटल सभठाँ सभ गाम आ शहरमे

नाच बढ़ल सभठाँ सभ गाम आ शहरमे

पच्छिमसँ आएल बाढि और डूबि गेल लोक

बान्ह हटल सभठाँ सभ गाम आ शहरमे

ई कैंसर-सन घातक कारी धनक बिमारी

देश कमल सभठाँ सभ गाम आ शहरमे

ठाढ कएल गेल अछि देबाल अनगिनत

लोक बँटल सभठाँ सभ गाम आ शहरमे

जहाँ-तहाँ सभ दिन बलजोरी आओर हत्या

नोर खसल सभठाँ सभ गाम आ शहरमे

छाहरि ने 'अनिल' भेटत झटकारि क' चलू

गाछ कटल सभठाँ सभ गाम आ शहरमे

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-17)

(38)

मूँह अयनामे बेर-बेर देखै छी हम

किछु अपनामे बेर-बेर देखै छी हम

बात बढि गेलै आ तिलसँ तार भ गेलै

सभ घटनामे बेर-बेर देखै छी हम

लोक सूतल जे छल डूबि गेल बाढिमे

सैह सपनामे बेर-बेर देखै छी हम

घटैत गेल तेल नाच बढिते रहल

सभ अंगनामे बेर-बेर देखै छी हम

बात मोनक 'अनिल' स'भ लीखल कहाँ

सभ रचनामे बेर-बेर देखै छी हम

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण- 15)

(39)

जिनगी त मसकल सबठाँ अछि

महाभारतक मल सबठाँ अछि

सभतरि चीरहरणके उत्सव
दुस्सासन उमतल सबठाँ अछि

कुड़हरिए पर पैर बजारय
दुर्योधन सनकल सबठाँ अछि

वि-द्‌युत क्रीड़ा पसरल सभतरि
शकुनी केर ई छल सबठाँ अछि

कर्ण लड़थि अर्जुनसँ एखनहुँ
नैतिकता लटकल सबठाँ अछि

जान दिअए सभ पाइक खातिर
धृतराष्ट्र सुटकल सबठाँ अछि

‘अनिल’इ धरती बिहुँसि सकैए

सय हाथी केर बल सबठाँ अछि

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण- 13)

(40)

चिंता तनकें दाबि रहल अछि की करियौ

मोन कतौ नै लागि रहल अछि की करियौ

एकहुटा नहि कल-करखाना मिथिलामे

लोक गामसँ भागि रहल अछि की करियौ

माए-बाबू छथि भाए-बहिन आ धिया-पुता

स’भ एम्हरे ताकि रहल अछि की करियौ

आस लगाक’ आयल छी हम जकरा सोझाँ

से हमरेसँ मांगि रहल अछि की करियौ

एकहि हाल अछि दिल्ली और दरभंगाके
सभठाँ बेटी कानि रहल अछि की करियौ

रावण केर खरुहान देशमे जहाँ-तहाँ
न'व भेषमे आबि रहल अछि की करियौ

'अनिल' गाछ जे दैए छाहरि जन-जनकें
कियो नुकाक' काटि रहल अछि की करियौ
(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-16)

(41)

जिनगीकें अखवार बनौने बैसल छी

घरकें हम बाजार बनौने बैसल छी

श्रद्धा ममता स्नेह प्रेम आनंद कतय

हम सभकें ऐंठार बनौने बैसल छी

सोझाँ केर संसारकें माया कहै छी हम

आ कल्पनाक संसार बनौने बैसल छी

गांधी जितलनि दुनिया सत्य अहिंसासँ

प्रेमकें हम व्यापार बनौने बैसल छी

थिक विवाह दू अंतरात्मा केर मिलन

हम जातिक ओहार बनौने बैसल छी

ईर्ष्या चिंता क्रोध मनुक्खक दुश्मन थिक
सभटाकें उपहार बनौने बैसल छी

जीवनके सभ दुख हरती शिक्षा मैया
मूर्तिक ह'म पहाड़ बनौने बैसल छी

अछि विधान त भ्रष्टाचारसँ लड़बाले'
हम सभकें लाचार बनौने बैसल छी
(सरल वार्णिक बहर/वर्ण- 15)

(42)

आगि लागल जेना हो बजारेमे

भांग घोरल जेना हो इनारेमे

हम सूतल प’ड़ल निश्चिंत छी

चुट्टी लागल जेना हो भराड़ेमे

कोना क’ रहब सुखसँ शान्तिसँ

बितैत गेल जिनगी नियारेमे

बाढिमे घेराएल लोक नाचैए

देखू ओ मगन अछि उधारेमे

जीयब कोना क’ मरिक’ ‘अनिल’

कहै छी गजल हम इशारेमे

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-12)

(43)

पानि चालनिमे सभदिन भरैत रहलौं

हम जंगलमे सभदिन   कनैत रहलौं

हारल नटुआ बिछैत अछि झुटका जेना

मोटा करजाक उघइत चलैत रहलौं

आइ चीरहरण द्रौपदीक फेर भ’ गेलै

कोनो कृष्ण केर बाट हम तकैत रहलौं

हमर चुप्पीसँ मेघहु ने गरजल कतौ

हम दिनहुमे तरेगन गनैत रहलौं

अपन हाथो टुटल अपन माथो फूटल

हम दुनियाभरिले' लाठी बनैत रहलौं

आब मुट्ठी कसल इ कियो देखय 'अनिल'

आब छीनब जे सभ दिन मंगैत रहलौं

(सरल वार्णिक बहर/ वर्ण 16)

(44)

अहाँ पूब कह्बै त ओ पच्छिम जाएत अहाँ की करबै

अहींक खाएत आ अहींकें गरिआएत अहाँ की करबै

आइ पित्ती आ पितिऔत सभसँ सिखबै छिऐ लड़नाइ

काल्हि यैह वृद्धाश्रमक रस्ता देखाएत अहाँ की करबै

आइ पएर छूबैए माला पहिरबैए प्रशंसा करैए

काल्हि अहाँमे एक सय दोख गनाएत अहाँ की करबै

नीक वक्ता बनबासँ पहिने नीक श्रोता बनब जरूरी

अन्यथा अहाँकें देखि क’ लोक पड़ाएत अहाँ की करबै

अपनाकें सड़बासँ गलबासँ बचा क’ राखब ‘अनिल’

ने त छाउरक ढेरी पर फेकि आएत अहाँ की करबै

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-21)

(45)

चारि टा दोकान चाहक हमर गामक चौकपर

भीड़ भारी भेल लोकक हमर गामक चौकपर

इण्डिया जीतल हमर किरकेटमे पाकिस्तानसँ
भोज रसगुल्ला' भांगक हमर गामक चौकपर

चलन मदिरालयक देखू आइ हमरा गाममे
ल' लेलक स्थान धामक हमर गामक चौकपर

हमर गामक लोककें बूझल ने छै हालो अपन
टूटि गेल स्कूल गामक हमर गामक चौकपर

चल गेला वासुदेवजी रामायणक पद बाँचिक'
के सोचैए बात रामक हमर गामक चौकपर

क' रहल चित्कार सुनियौ निरभया और दामिनी

खेल नै खेलू इ ताशक हमर गामक चौकपर

‘अनिल’ ककरो हाथमे नहि ‘घ’र बाहर’ देखलौं

लोक चर्चा करै भोजक हमर गामक चौकपर

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण- 19)

(46)

मीता एहने लागि रहल अछि

चोर जोरसँ बाजि रहल अछि

रहत हजारो युवक कुमारे

इहो ज़माना आबि रहल अछि

ककरहु ले’ मुनहारि सांझ ई

कियो पराती गाबि रहल अछि

दुलहा आ दुलहिन उदास छै

वरियाती टा नाचि रहल अछि

जकर मूँह बारीक चिन्है छथि

से टा मुंगबा पाबि रहल अछि

'अनिल' भीड़मे कोना क' चीन्हब

कथी कत' के दाबि रहल अछि

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण- 12)

(47)

हमर आँखिमे अछि नोर भरि गामक

हमर आँखिमे अछि भोर भरि गामक

रौदी अथवा दाही अछि भाग्यमे हमर

हमर आँखिमे अछि चोर भरि गामक

ई पाग ई मुरेठा हमर आँखिमे अछि

हमर आँखिमे अछि जोर भरि गामक

हमर आँखिमे ई बेगरताक अन्हड़

हमर आँखिमे अछि सोर भरि गामक

'अनिल' आँखिमे अछि गांधी बाबाक गाछी

हमर आँखिमे अछि मोर भरि गामक

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-15)

(48)

रौदीक मारिसँ आइ कुहरैत हमर गाम

हमरा करैछ सोर बिलटैत हमर गाम

पसेना स'भ देहक सभ ठोर पर फुफरी

पीठक घाव सन ई टहकैत हमर गाम

सभटा चास परती आ सभ खेतमे दरारि

दहेजक लहासमे लहकैत हमर गाम

सभ भोर केर चुप्पी सभ साँझ केर उदासी

करजाक बोझसँ ओ नचरैत हमर गाम

शहरक सीमान दिस भगलौं हम ‘अनिल’

ताकय हमर बाट उजड़ैत हमर गाम

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण- 17)

(49)

शब्दक पावन धाम बहुत अछि

भाइ अहाँकेर नाम बहुत अछि

बजा रहल अछि हरियर गाछी

जामुन आम लताम बहुत अछि

हरियर बाध मनोरम लागय

चूअल एहिठाँ घाम बहुत अछि

मनुख बेकल अछि जमा करैले'

भय चिंता सभ ठाम बहुत अछि

चलब कोनाक' एकपेरिया धए

एहि रस्तापर जाम बहुत अछि

सदिखन दुनियाले' जिबैत अछि

ऐ धरतीपर राम बहुत अछि

'अनिल' सत्य सुन्दरतम बजियौ

नैतिकता बदलाम बहुत अछि

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-13)

(50)

कखनो केहनो हवा चलै छै की करबै

गाछ बबूरक आम फड़ै छै की करबै

जिनगी भरि रहलै चोरी और डाकामे

आब कुम्भ असनान करै छै की करबै

खेत बेचि क’ भोज केलक रसगुल्लाके

धिया-पुता सभ काहि कटै छै की करबै

आइ एत’ आ काल्हि ओत’’निर्भया’ मरल

नहि ककरोसँ कियो डरै छै की करबै

अपना गामक अपने चौकीदार बनू

पुलिस घ’रमे पानि भरै छै की करबै

लोकपालके बिल बसातमे बिला गेलै

सभ कुरसीए लेल लड़ै छै की करबै

लोक जिताक'त ओकरा पठबै छै दिल्ली

सदनमे जा क' सूति रहै छै की करबै

खर्च करत नहि पाइ एकोटा पोथीमे

मैथिलीएसँ गुजर चलै छै की करबै

हैत 'अनिल'की नोकर भ' गेलै मालिक

आ अहिना इतिहास बनै छै की करबै

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-15)

(51)

सत्यक खातिर लड़ि क’ देखू

टीस दोसरक हरि क’ देखू

बढि क’ देखू ससरि क’ देखू

आगू नमरि-नमरि क’ देखू

कुरसीपर छी तें बम-बम

कनिएँ नीचाँ उतरि क’ देखू

मतलब की’ थीक जीवनके

रामायणमे विचरि क’ देखू

पावनि भ’ जायत ई जिनगी

ई अपमान बिसरि क’ देखू

अनमन कारी मेघ अहाँ छी

धरतीपर त झड़ि क’ देखू

‘अनिल’ अहाँकें देत मर’ नै

लोकक खातिर मरि क’ देखू

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण- 11)

(52)

बीतल दुखके बात करै छी

सबसँ बड़का पाप करै छी

संग अहाँके किछु नै जायत

हम्मर-हम्मर जाप करै छी

शब्दक लागल तीर मोनमे

एहेन किए आघात करै छी

हमरा पूछू कष्ट अभावक

कहुना सांझसँ प्रात करै छी

पहिने मैल केलौं उज्जरकें

एखन मैलकें साफ़ करै छी

दुःख सोझाँ सुख तकरा पाछाँ

किएक बाप-रे-बाप करै छी

अपने कर्मक फल 'अनिल'

अपनेकें हम माफ़ करै छी

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-11)

(53)

नोरेमे सभटा आखर दहा जाइए

किछु बात सोचि-सोचिक'कना जाइए

जे फूल देखि मोन गुनगुना उठय

सेहो कतेक जलदी मउला जाइए

थिर रहय ने ख़ुशीके' पल मोनमे

ल'ग आबय छिटकि क' पड़ा जाइए

निन्न टुटिते देखै छी वैह स'भ काँट

आ सपनाक उपवन बिला जाइए

भूख पाइक एत्ते किएक बढि गेलै

सहोदरोक गरदनि दबा जाइए

चाहै छी बात 'अनिल' मोनेमे राखि ली

पूछय कियो कुशल त बजा जाइए

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-14)

(54)

फाँड़ बान्हि-बान्हि लोक चलिते रहल

धधरामे गाम-गाम जरिते रहल

आगि उठलै कत'सँ किए और कोना
स'भकें स'भ ई प्रश्न पुछिते रहल

चीरहरण द्रौपदीक भइए गेलै
कृष्ण केर बाट लोक तकिते रहल

लोक सत्यकेर छातीमे काँटी ठोकैत
सत्यनारायण-कथा सुनिते रहल

फेर वैह घर फूसक कोरो आ बाती
'अनिल' यैह सोंगर लगिते रहल
(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-14)

(55)

जीबै छी जिनगी अहीं लागि क’ हम

कहू की सोचै छी एत’ आबि क’ हम

सभ ठाँ अहाँ छी संग-संग हमहूँ

जायब कत’ स कत’ भागि क’ हम

सभ गाछ बरक सुखा गेल देखू

सुस्ताएब जा क’ कत’ थाकि क’ हम

सत बात बाजी से होइए सिहंता

चुप छी अहींके मुँह ताकि क’ हम

देखब ‘अनिल’आब कानेसँ तोरा

भाग’ब भोरे गजल गाबि क’ हम

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण- 13)

(56)

पोखरि बाध देखौलनि बाबा

आंगुर छोड़ि चलौलनि बाबा

बाघ भालु आ बानर देखलौं

कनहापर बैसौलनि बाबा

नाच-तमाशा कते देखौलनि

मेला बहुत घुमौलनि बाबा

काँट-कूससँ दूरे रखलनि

कोरा बहुत उठौलनि बाबा

सीता-रामक कथा सुनौलनि

बाजब सत्य सिखौलनि बाबा

आँखि मूनि लेलनि ओ जहिया

हमरा कते कनौलंनि बाबा

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-11)

(57)

सुरुज तरेगन चानक दुनिया

नीक हमर भगवानक दुनिया

हरहर-खटखट-धमगज्जर
नरक किए धनवानक दुनिया

उत्सव केर सृजन करैत अछि
नव-नव अनुसंधानक दुनिया

महाभारतक बीज बनल अछि
निरभयाक अपमानक दुनिया

कुम्भकरणकें नहि सोहाइत छै
जप-तप-जोग-धियानक दुनिया

'अनिल'नीक सभले' सभदिनले'
मकइ गहुम आ धानक दुनिया
(सरल वार्णिक बहर/वर्ण- 13)

(58)

सभकें अपन समान बुझलियै

आ पाथरकें भगवान बुझलियै

दौड़िते-दौड़िते थाकि गेलहुँ हम

लय गेल कउआ कान बुझलियै

पिज्जा-बरगर हम नहि बुझलौं

मकइ गहुम आ धान बुझलियै

निन्न अलोपित रहल कते दिन

तखनहि सिंदुरदान बुझलियै

मंदिर-मंदिर ताकि एलहुँ हम

सभतरि न’व दोकान बुझलियै

चोइर करै छल घेंट कटै छल

हम जकरा धनवान बुझलियै

जिनगी छल माइक आँचर-सन

किरकेटकेर मैदान बुझलियै

स्वाभिमान जे छल भरि नगरक

हम तकरा अपमान बुझलियै

‘अनिल’जे प्रेमक दीप जरै छल

सभ तीरथअसथान बुझलियै

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण- 13)

(59)

स’भ शहर सभ गामक छै

इएह हाल सभ ठामक छै

सीताहरणक दृश्य स’भ ठाँ

सभठाँ किरतन रामक छै

नेत बेचि धन जमा करय

कबुला सभ चारू धामक छै

किछुए दिनके पाहुन छी ई

चमक-दमक जे चामक छै

कािल्ह खाधि छल आइ महल

सभ कमाल बस घामक छै

‘अनिल’ स्वयंमे ताकू हुनका

आवश्यकता कोन धामक छै

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-11)

(60)

गाम-घर केर हाल ने पूछू

बीतल कोना ई साल ने पूछू

ऊपर उठल गरीबी रेखा

के राजा आ के कंगाल ने पूछू

पाँच साल चुप्पे रहि देखियौ

एखन कोनो सबाल ने पूछू

लोकपाल पर अड़ला अन्ना

केहेन भेल बबाल ने पूछू

‘दुर्गा’केर निलंबन भेलनि

महिषासुरके जाल ने पूछू

कानय कते हकन्न देशमे

ब’नल कते दलाल ने पूछू

गाछ उखड़लै कते ‘अनिल’

अन्हड़-केजरीवाल ने पूछू

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण-11)

(61)

गाम छोड़ि क' शहरमे एलौं

बूझू त हम जहलमे एलौं

सुनलौं कते शराबक गाथा

ककरो कहाँ कहलमे एलौं

घर-दुआरि कत्ते बहि गेलै

हम त बाढि कमलमे एलौं

कन्नारोहट बीति गेल छल

आहाँ चहल-पहलमे एलौं

दुनिया भागल दूर प्रीतिसँ

हम त प्रीति-महलमे एलौं

लिखलौं अपने कथा 'अनिल'

कोना गीतसँ गजलमे एलौं

(सरल वार्णिक बहर/वर्ण- 11)

भाग-2

अरबी बहरमे गजल

क्र.सं. मतला

1. टूटल छी तँइ गजल कहै छी /भूखल छी तँइ गजल कहै छी
2. सभजनकें मतिमान बुझै छी/ कण-कणमे भगवान बुझै छी

3. हम नै ककरो बाट तकै छी/हम सूतै ले' खाट तकै छी
4. लोक नीचाँ उतरि जाइए/खेल सभटा उसरि जाइए
5. दूभि और धान छी अहाँ / पान आ मखान छी अहाँ
6. आगाँ आ पाछाँ बदलल / गाम शहर सभटा बदलल
7. कविता गीत गजल राखू / सदिखन मोन विमल राखू
8. रातिकें राति कहब जरुरी छै/भोरकें भोर बनब जरुरी छै
9. सदिखन शुभ चिंतनमे छी / हम नेहक बंधनमे छी
10. नित्य उठै छी भोरे-भोरे / घूमि अबै छी भोरे-भोरे
11. गीत पिरीतिक गाबि रहल छी/ वाह कते दिब लागि रहल छी
12. अपने छाँहसँ हम डेरा गेल छी/अपने घरमे हम हेरा गेल छी

13. हुनका हमराले'ममता नै / हमरो हुनकर अछि खगता नै

14. साँझ पड़ै छै की करबै / राति अबै छै की करबै

15. कातिक अगहन पूस देखै छी / माँछी मच्छर मूस देखै छी

16. दोहा सभ रटलौं जीवन भरि/रामायण पढ़लौं जीवन भरि

17. लोक जते छथि दुविधामे / सब छथि हमरा कवितामे

18. देखैवला कियो नै छै / रोकैवला कियो नै छै

19. कोसी कातक गाम भेलौं / गाछक पाकल आम भेलौं

20. नीक संगमे पड़ू अहाँ / गीत गजलमे रहू अहाँ

(1)

टूटल छी तँइ गजल कहै छी

भूखल छी तँइ गजल कहै छी

ऑफिस सबहक कथा कहू की

लूटल छी तँइ गजल कहै छी

घरमे बैसल मगन रही सभ

गूगल छी तँइ गजल कहै छी

खापड़ि-लारनि कते कनौलक

भूजल छी तँइ गजल कहै छी

उक्खड़ि केलक मदति समाठक

कूटल छी तँइ गजल कहै छी

बाबूजीकें बुझलियनि

चूकल छी तँइ गजल कहै छी

पुरबा-पछ्बा कते जगौलक

सूतल छी तँइ गजल कहै छी

कहलनि अपने कथा ‘अनिल’ ई

झूकल छी तँइ गजल कहै छी

(मात्रा क्रम:2222-12-122)

(2)

सभजनकें मतिमान बुझै छी

कण-कणमे भगवान बुझै छी

संकटमे ऐ ठाम पहुँचलह

तोरे हम भगवान बुझै छी

छै जकरा संपत्ति विवेकक

हम तकरे धनवान बुझै छी

दोसरकें अपमान करबकें

हम अपने अपमान बुझै छी

देलक जे सुख-शान्ति धरापर

हम तकरे गुणवान बुझै छी

जीवन ले' उपहार 'अनिल'ई

लेखनकें अभियान बुझै छी

(मात्रा क्रम:222-221-122)

(3)

हम नै ककरो बाट तकै छी

हम सूतै ले' खाट तकै छी

बकरी संगे बाघ नहेतै

ओ निरमल हम घाट तकै छी

हमरा मॉलक बाट धरेलौं

हम गामक ओ हाट तकै छी

होटल नवका बिहुँसि रहल अछि

हम ओ टूटल टाट तकै छी

बाट धरौलक नीक ‘अनिल’कें

हम ओ सुन्दर चाट तकै छी

(मात्रा क्रम:2222-21-122)

(4)

लोक नीचाँ उतरि जाइए

खेल सभटा उसरि जाइए

गाछ कहियो मजरि जाइए

फेर कहियो झखड़ि जाइए

पाइ राखू अहाँ बैंकमे

पाइ हाथसँ ससरि जाइए

थालमे नित चलय दौड़ि ओ

माटिपर जे पिछड़ि जाइए

बाट कतबो कतौ नीक हो

बाट लोकक बिगड़ि जाइए

मूनि राखब कथी कोनठाँ

मूस सभटा कुतरि जाइए

‘अनिल’कतबो कियो जोरगर

अन्तमे सभ नचरि जाइए

(मात्रा क्रम:2122-12-212)

(5)

दूभि और धान छी अहाँ

पान आ मखान छी अहाँ

दौड़ि-दौड़ि थाकि गेल छी

दूर आसमान छी अहाँ

बेर-बेर गाबि देखलौं

वेद आ कुरान छी अहाँ

काँट भरल छैक बाटपर

फूलके समान छी अहाँ

मोन केर हाल ई 'अनिल'

देह हम परान छी अहाँ

(मात्रा क्रम:212121-212)

(6)

आगाँ आ पाछाँ बदलल

गाम शहर सभटा बदलल

जीवनके आशा बदलल

प्रेमक परिभाषा बदलल

बदलल समदाउन सोहर

अछि बारहमासा बदलल

किछुए दिन दिल्ली रहलै

छै आँखिक भाषा बदलल

पैकेजे मूलो बूझू

सबहक अभिलाषा बदलल

अंकल अंटी भरि दुनिया

मौसी आ मौसा बदलल

गीत गजल बदलल बदलल

‘अनिल’हमर कविता बदलल

(मात्रा क्रम:22222-22)

(7)

कविता गीत गजल राखू

सदिखन मोन विमल राखू

चारू धाम रहत सटले

सदिखन नयन सजल राखू

शांतिक धार बहय भीतर

बाहर चहल-पहल राखू

आँखिक खेल बुझू सभटा

कानो अपन कुशल राखू

सत्यक लेल लड़ू सभदिन

जीवन 'अनिल'सुफल राखू

(मात्रा क्रम:22-2112-22)

(8)

रातिकें राति कहब जरुरी छै

भोरकें भोर बनब जरुरी छै

जीत की लेब अहाँ सुनामीमे

मोनके संग लड़ब जरुरी छै

माथपर बोझ किए अनेरे ई

अपन बस ध्यान करब जरुरी छै

छोड़ि कय गाम नगर घुमै छी हम

गामके हाल बुझब जरुरी छै

प्राणमे गीत 'अनिल' भरब सदिखन

सत्यके संग चलब जरुरी छै

(मात्रा क्रम:212-2112-1222)

(9)

सदिखन शुभ चिंतनमे छी

हम नेहक बंधनमे छी

जीवन आ यौवनमे छी

कण-कणमे जन-जनमे छी

अमरित के खगता हमरा

तें सागर मंथनमे छी

नै छी मंदिर मसजिदमे

अन्नाके अनशनमे छी

'अनिल' अहाँ चूड़ी कंगन

पुरहरमे अरिपनमे छी

(मात्रा क्रम:2222222)

(10)

नित्य उठै छी भोरे-भोरे

घूमि अबै छी भोरे-भोरे

नीक लगै छथि हरियर धरती

देखि गबै छी भोरे-भोरे

आम लतामक गाछी देखी

गीत सुनै छी भोरे-भोरे

पूज्य हमर छथि माँ आ बाबू

चरण छुबै छी भोरे-भोरे

मगन रहै ले’ भेटल जीवन

मनन करै छी भोरे-भोरे

देश हमर अछि हम छी देशक

सैह जपै छी भोरे-भोरे

सभक ख़ुशीले’ तन-मन सदिखन

‘अनिल’ नचै छी भोरे-भोरे

(मात्रा क्रम:21-122-2222)

(11)

गीत पिरीतिक गाबि रहल छी

वाह कते दिब लागि रहल छी

गाछ बबूरक आम फड़त नै

काँट पयरतर पाबि रहल छी

देश हमर अछि शान भाइजी

बात सिनेहक बाजि रहल छी

लोक कहै छल गाम बदललै

बात पुराने मानि रहल छी

हमर कहब अछि हमर दोख नै

दोख अहाँमे ताकि रहल छी

दोख हमर की दोख हुनक की

कंठ ककर के दाबि रहल छी

भोर कहै छथि राति जाइए

'अनिल'रहू हम आबि रहल छी

(मात्रा क्रम:21122-21-212)

(12)

अपने छाँहसँ हम डेरा गेल छी

अपने घरमे हम हेरा गेल छी

ई के ई कत' ई कोना ई कखन

अपने प्रश्नसँ हम घेरा गेल छी

हमरा आंगनमे नै छथि मैथिली

देखू कोना हम सेरा गेल छी

एम्हर छै सिट्ठी आ ओम्हर त रस

अपने क'लमे हम पेरा गेल छी

सोचै छी हमहूँ एखन 'अनिल' ई

कोम्हर कोना हम फेका गेल छी

(मात्रा क्रम:22222-22212)

(13)

हुनका हमराले'   ममता नै

हमरो हुनकर अछि खगता नै

गाड़ी-घोड़ा   राखू   अपने

हमरा कोनो बेगरता नै

पाछाँमे ओ निंदा करता
सोझाँमे चुप किछु कहता नै

सुनता लेकिन किछु नै बजता
जहिया बजता किछु सुनता नै

सबहक अँकुरी खा कय मरता
ककरो खातिर ओ कनता नै

करजा भेटनि नै नै कहता
लेकिन करता ओ चुकता नै

कुरसी खातिर की की केलनि

पुछबनि कखनो किछु गछता नै

‘अनिल’ कहै छथि की करबै यौ

ओ जे बजता से करता नै

(मात्रा क्रम:22222222)

(14)

साँझ पड़ै छै की करबै

राति अबै छै की करबै

जखन लगै छै डर

लोक जगै छै की करबै

दूध पिबै छै नै छौंड़ा

चाह तकै छै की करबै

बात सुनै छै नै ककरो

मारि करै छै की करबै

गाछ बबूरक छै सभ ठाँ

आम फड़ै छै की करबै

टीक पकड़ने छै गदहा

बाप कहै छै की करबै

‘अनिल’कमासुत बेटाले’

माँछ बनै छै की करबै

(मात्रा क्रम:21-122-222)

(15)

कातिक अगहन पूस देखै छी

माँछी मच्छर मूस देखै छी

ऑफिस सबहक हाल ने बदलल

सबतरि चतरल घूस देखै छी

मुरही ककरो लेल अछि सपना

ककरो मुँहमे जूस देखै छी

बिजली पानिक हाल ने पूछू

सभठाँ किछु मनहूस देखै छी

खतरा आतंकीक विश्वमे

लन्दन पेरिस रूस देखै छी

जे निरधन छल 'अनिल'ओकर की

सबहक घर सभ फूस देखै छी

(मात्रा क्रम:222221-222)

(16)

दोहा सभ रटलौं जीवन भरि

रामायण पढ़लौं जीवन भरि

बुझलौं नै सीता माताकें

मिथिलामे रहलौं जीवन भरि

दुनियाकें माया मानल हम

सपनामे घुमलौं जीवन भरि

सूतलमे सूतल हम रहलौं

जगलोमे सुतलौं जीवन भरि

जीवन भरि अनका पर हँसलौं

अपनाले’ कनलौं जीवन भरि

‘अनिल’ अहाँ की बुझबै दुनिया

कवितामे बहलौं जीवन भरि

(मात्रा क्रम:222-22-222)

(17)

लोक जते छथि दुविधामे

सब छथि हमरा कवितामे

नै घूमी काबा-काशी

हम घुमइत छी भनितामे

जे जत' छथि सभ मुश्किलमे

दिल्ली मुंबइ पटनामे

सुख-दुःख अछि सदिखन संगे

हम पबइत छी अपनामे

सबहक बखरामे सुख हो

सभ किछु छै ऐ वसुधामे

कहथि 'अनिल' अनकामे नै

टेटर ताकू अपनामे

(मात्रा क्रम:2222222)

(18)

देखैवला कियो नै छै

रोकैवला कियो नै छै

पीठो अपन सतत ठोकै

हूथैवला कियो नै छै

सभटा तुरत-तुरत चाही

बूझैवला कियो नै छै

किछु नै रहल तिजोरीमे

मानैवला कियो नै छै

देखू तड़क-भड़क सभठाँ

सोचैवला कियो नै छै

दुखरा अपन कहब ककरा

सूनैवला कियो नै छै

सोचू 'अनिल' कहाँ हम छी

पूछैवला कियो नै छै

(मात्रा क्रम:2212-1222)

(19)

कोसी कातक गाम भेलौं

गाछक पाकल आम भेलौं

अपने पोखरि धार बनलौं

अपने चारू धाम भेलौं

कहियो बनलौं कृष्ण-राधा

कहियो सीता राम भेलौं

जाही खातिर मान भेटल

ताही ले' बदलाम भेलौं

दादा अपने थीर रहियौ

अपने घरके खाम भेलौं

पच्छिम भेला 'अनिल' पूबसँ

हम सभ दहिनसँ बाम भेलौं

(मात्रा क्रम:2222-2122)

(20)

नीक संगमे पड़ू अहाँ

गीत गजलमे रहू अहाँ

जाहि बाटपर मगन रही

ओहि बाटपर चलू अहाँ

दौड़ि चलब आ खसब किए

डेग सोचि बस धरू अहाँ

माटि पानि ले’ लिखू पढ़ू

मोन छोट जुनि करू अहाँ

आउ संग मिलि चलू 'अनिल'

नाम लेल जुनि लड़ू अहाँ

(मात्रा क्रम:21212-1212)